[Postulates of Morality]

नैतिकता की मान्यताएं :→

प्रत्येक शास्त्र की कुछ आवश्यक मान्यताएं होती हैं जिन्हें सत्य मानकर ही हम शास्त्र मे विचार-विमर्श प्रारम्भ करते हैं। इसी कारण किसी शास्त्र की मान्यता को उस शास्त्र की आवश्यक शर्त (condition) समझा जाता है। इनको मान्यता इसलिए कहा जाता है कि इनको माने बिना हम आगे नही बढ़ सकते। हम शास्त्र के अन्य सिद्धांतों की परीक्षा करते हैं परन्तु मान्यताओं की परीक्षा नही करते। इन्हें सत्य मान लेते हैं अतः इन्हें मान्यता कहते हैं। सभी शास्त्रों मे कुछ न कुछ मान्यताएं होती हैं। नीतिशास्त्र मे भी कुछ मान्यताएं हैं जिन्हें सत्य जानकर ही नैतिक विचार प्रारम्भ किया जाता है। इन्हें ही नैतिकता की आवश्यक मान्यताएं कहते हैं।

IMPORTANT

आवश्यक नैतिक मान्यताएं निम्नलिखित हैं:-

(क) व्यक्ति (Person)
(ख) विवेक (Reason)
(ग) आत्म-नियंत्रण (Self-determination)

FEBRUARY 2012

Mon		6	13	20	27
Tue		7	14	21	28
Wed	1	8	15	22	29
Thu	2	9	16	23	
Fri	3	10	17	24	
Sat	4	11	18	25	
Sun	5	12	19	26	

Scanned by CamScanner

नीतिशास्त्र में कोई विचार सत्य मानकर ही प्रारम्भ होता है। नीतिशास्त्र में हम कर्म के औचित्य पर विचार करते हैं। कर्म व्यक्ति के द्वारा होता है। कर्म करने वाले को हम कर्त्ता कहते हैं। यदि किसी कार्य का कर्त्ता ही न हो तो उचित और अनुचित का प्रश्न ही नहीं आता। अतः कर्त्ता होना तो नैतिकता की प्रथम आवश्यक मान्यता है। कर्त्ता होने का भी नीतिशास्त्र में एक विशेष अर्थ है। जब हम स्वतंत्र होकर कोई कार्य करते हैं तभी कर्त्ता कहलाते हैं। हम तभी स्वतंत्र होकर कोई कार्य करते हैं जब हम अपने संकल्प से कोई कार्य करते हैं। जब हमारे ऊपर कोई बाह्य प्रलोभन या दबाव कार्य नहीं करता। यही स्वतंत्र कर्त्ता का स्वरूप है। परन्तु इस स्वरूप को नहीं प्राप्त कर सकता है, अर्थात् स्वतंत्र कर्त्ता वही हो सकता है जो आन्तरिक विवेक से संचालित हो। तात्पर्य यह है कि जब हम केवल पाशविक प्रवृत्ति या शारीरिक भूख से लाचार होकर कोई कार्य करते हैं,

IMPORTANT

तो कार्य विवश होकर करते हैं। आन्तरिक विवेक से तब ही कार्य करते हैं जब सोच-समझकर उचित-अनुचित का निर्णय कर कोई कार्य करते हैं परन्तु आन्तरिक विवेक के लिए भी आत्म नियन्त्रण या आत्म-संयम की आवश्यकता है। जिसके जीवन में संयम है और जो अपनी सहज प्रवृत्तियों का नियंत्रण कर सकता है, वही आन्तरिक विवेक से कार्य करता है। किसी कार्य के करते समय अनेक विकल्प हमारे सामने आते हैं। हम अन्य को छोड़कर एक को चुन लेते हैं। यहाँ तक एक का चयन और अन्य का त्याग करने में अपनी वासनाओं-इच्छाओं को नियंत्रित करना पड़ता है। यही स्वतंत्र कर्त्ता से किया हुआ आन्तरिक विवेक से सम्पन्न आत्म नियंत्रित कार्य ऐच्छिक कर्म कहलाता है।

IMPORTANT ऐच्छिक कर्म कर्त्ता के यथार्थ अभिप्राय और चरित्र को बतलाता है। इसी कर्म को हम नैतिक निर्णय का विषय मानते हैं। अर्थात् इसे ही हम नैतिक दृष्टि से उचित या अनुचित कहते हैं।

FEBRUARY 2012

Mon		6	13	20	27
Tue		7	14	21	28
Wed	1	8	15	22	29
Thu	2	9	16	23	
Fri	3	10	17	24	
Sat	4	11	18	25	
Sun	5	12	19	26	

अनीता कुमारी गुप्ता
डी० बी० एस० कॉलेज